रात्रि क्लास 13/11/1966 :– बच्चों ने अनुभव सुनाया। अब बच्चों ने ज्ञान और भक्ति का फर्क समझा। सन्यासी लोग भी कहते हैं– ज्ञान, भक्ति और वैराग। वो समझते हैं कि हम वैरागी हैं। घरबार छोड़ा है। अब तुम बच्चे समझते हो कि वो तो हठयोग का वैराग है। अनेक प्रकार के हठ क्रियाकर्म सिखलाते हैं। एक जगह पर सब प्रकार के हठयोग की क्रियाएँ सिखाई जाती हैं। दिखाते हैं। सन्यासियों का है निवृत्तिमार्ग। अब वो लोग (शास्त्रों) को ज्ञान समझते हैं। कहते भी हैं कि ज्ञान परमपिता परमात्मा पढ़ाते हैं; परन्तु वो ज्ञान कब दिया है यह भी कोई को पता ही नहीं है। ज़रूर उनको आकर शरीर में बैठ कर ज्ञान देना पड़े। बच्चे जानते हैं कि ऊँच ते ऊँच भगवान है। वो आकर ज़रूर ऊँच ही बनावेंगे। भगवान और भगवती बनाते हैं। ल०ना० को भी भगवान–भगवती कहा जाता है। भगवान तो निराकार बाप है। फिर बच्चों को ज्ञान वो ही देते हैं जिससे फिर बच्चे विश्व पर राज्य करते हैं। तो इन्होंने भी विश्व पर राज्य किया है। तो क्या विश्व के बाप ने एक को ही बैठकर ज्ञान दिया? उनकी तो राजधानी थी ना। मनुष्यों को समझ में ही नहीं आता है। नर–नारायण कौन हैं?

4 भुजाएँ क्यों दी हैं? 4 भुजाओं का क्या अर्थ होगा? इनसे वो क्या करते होंगे? तो इनकी स्त्री को भी 4 भुजाएँ होंगी। वंशावली को भी 4 भुजाएँ होंगी। वो नहीं समझते हैं, तुम जानते हो कि सतयुग में यह राज्य किया (कैसे)। यह तो डबल सिरताजधारी हैं। तो राजाई इन्होंने की होगी। बुलाते भी हैं तो ज़रूर कब सुख दिया होगा। बाप समझाते हैं वो है सन्यासियों का ज्ञान। अब बाप समझाते हैं कि खीर सागर में कोई खड़े हो नहीं सकते, लेट नहीं सकते। वो लोग इतना हठयोग सिखलाते हैं, क्रियाएँ करते हैं। बाप कहते हैं कि अच्छा इतना किया मगर इससे हुआ क्या! कोई अमर बने क्या? समुद्र को तैर कर पार किया। अच्छा, 5–10 लाख इनाम मिला, मगर हुआ क्या? इनाम मिला बस ना! अब बच्चे जानते हैं कि हम पुरानी दुनिया से निकल नई दुनिया में जावेंगे। हमको कोई नदी आदि पार नहीं करनी है। कहते हैं ना नैया पार करो। वो तो कोई बात है नहीं। ना कोई स्टीमर है। एक चंद्रकांत वेदांत है। बाबा का गुजराती में पढ़ा हुआ है। उसमें स्टीमर की कथा लिखी हुई है। यहाँ स्टीमर भी तो हैं नहीं। कहते हैं कि खेवैया मेरी नैया पार करो। हो तो मनुष्य ना। पावन बनने के लिए, बाप से वर्सा लेने के लिए पढ़ाई कर रहे हो। नैया आदि कोई है नहीं। तुम बच्चे जानते हो पढ़ाई ऊँच ते ऊँच है ही राजयोग की। बाप कहते हैं कि तुमको सतोप्रधान बनना है। कहते भी हैं ना कि आत्मा और परमात्मा अलग रहे बहुकाल। अब समझते तो हैं नहीं, किस बाप से कौन बहुकाल अलग रहा है। सो तो तुम आदि सनातन देवी–देवता धर्म वाले ही जास्ती समय अलग रहते हो। पुरुषोत्तम युग कहा जाता है संगमयुग को। कुंभ भी कहा जाता है संगम को। संगम पर ही मेला लगता है ना। यह संगम का मेला है ना जो कि तुम आत्माएँ बाप परमात्मा से मिलने आई हो। तुमने ही 84 जन्मों का चक्र पूरा किया है। अब फिर वापिस जाना है। पावन ज़रूर बनना है। कहते भी हैं पतित–पावन। वो तो फिर भगवान ही है। वो ही स्वर्ग की स्थापना करते हैं। बाप कहते हैं कि तुम ही मालिक थे ना। तुमने ही वर्सा पाया था। फिर अब तुम ही मालिक बन रहे हो। स्वर्ग में तो देवी–देवता ही होते हैं। बाकी सब आत्माएँ परमधाम में रहती हैं। तुम बच्चों को सृष्टिचक्र के आदि–मध्य–अंत का ज्ञान है। द्वापर से रावण राज्य शुरू होता है। भक्तिमार्ग की आदि होती है। आधा कल्प है ही दिन। भक्तिमार्ग में भी विकारों का सन्यास तो किया जाता है ना। मीरा ने विकारों का सन्यास किया और घरबार छूट गया। उसने बोला कि हम तो पवित्र रहेंगे, कृष्ण पास जाऊँगी। राजा को भी छोड़ दिया। गीत आदि तो बाद में बैठ कर बनाते हैं। अब तुम जानते हो कि कृष्णपुरी स्थापन हो रही है। पावन बन रहे हो, फिर राज्य करोगे। अब उन लोगों की महिमा की जाती है, वैसे ही अब ल०ना० हैं तो नहीं, बस महिमा की जाती है। वो तो कुछ नहीं जानते हैं कि बाप कौन हैं, स्वर्ग क्या है। तो कितनी पत्थरबुद्धि बन गई है। सब गाते भी झूठ, बोलते भी झूठ ही है। कृष्ण को गांव का भी छोरा कहते हैं ना। अब तुम जानते हो कि गांव का छोरा कौन है। बाप ही बैठ समझाते हैं कि तुम बच्चों ने 84 जन्म पूरे किए हैं। अब पावन बन रहे हो। बच्चे राजयोग सीख रहे हैं, फिर पावन दुनिया में राज्य करेंगे। बच्चे समझते हैं ना? तुम्हारी ही 84 जन्मों की कहानी है। पहले सतयुग में थे फिर त्रेता में आये। फिर राम राज्य गुम हो गया फिर

रावण राज्य में आये। हम फिर .... पुजारी बन गए। कहानी कितनी सहज है। जैसे कि एक कहानी है। सत्यनारायण की कथा है। वो तो रोचक कहानियाँ बैठ सुनाते हैं। सब गर्भजेल में पड़े हुए हैं। तुम बच्चों को तो अब गर्भमहल में जाना है। कितना नशा चाहिए। अब तुम बच्चे समझते हो कि सन्यासी आदि क्या समझाते हैं। कहो, यह क्या बकते हो? पहले–2 भक्ति करने वालों का तो बहुत ..... है। उनकी भी माला बनी हुई है। तुम्हारी अलग है, भक्ति करने वालों की अलग है। पहले–2 तुमने शिव की ही भक्ति की थी। आधा कल्प में 63 जन्मों में धक्के ही खाए हैं। वहाँ फिर आधा कल्प में 21 जन्म होते हैं, यहाँ 63 हो जाते हैं। तो अब तुमको पूरा–2 पुरुषार्थ राजाई पाने का करना चाहिए। अब तुम्हारे 84 जन्म पूरे हुए, अब तुमको बाप के पास जाना है। बच्चों को अब शांतिधाम में ही पूर्ण शांति मिलेगी। अच्छा जी, गुडनाइट।